

[illegible]

(155)

भवाद्या रमणीययोः यथावेदमते
नचिपरा रमणीयमते रमणीयादी
रमणीयानां
६३२२ ३०२१/३१

१२०

कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये

१२२

कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये

६३२२

कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये

३६२२

कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये

२००

कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये

६३२२

कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये

३६२२

कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये

२००

कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये

६३२२

कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये

३६२२

कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये

२००

कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये

६३२२

कमलपद्मिनी च यो क रमणीये
कमलपद्मिनी च यो क रमणीये

३६२२

कमलपद्मिनी च यो क रमणीये

(159)
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ २ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ ४ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ ६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ ८ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ १० ॥

[illegible]

... ॥ १०८ ॥ ...
... ॥ १०९ ॥ ...
... ॥ ११० ॥ ...
... ॥ १११ ॥ ...
... ॥ ११२ ॥ ...
... ॥ ११३ ॥ ...
... ॥ ११४ ॥ ...
... ॥ ११५ ॥ ...
... ॥ ११६ ॥ ...
... ॥ ११७ ॥ ...
... ॥ ११८ ॥ ...
... ॥ ११९ ॥ ...
... ॥ १२० ॥ ...
... ॥ १२१ ॥ ...
... ॥ १२२ ॥ ...
... ॥ १२३ ॥ ...
... ॥ १२४ ॥ ...
... ॥ १२५ ॥ ...
... ॥ १२६ ॥ ...
... ॥ १२७ ॥ ...
... ॥ १२८ ॥ ...
... ॥ १२९ ॥ ...
... ॥ १३० ॥ ...
... ॥ १३१ ॥ ...
... ॥ १३२ ॥ ...
... ॥ १३३ ॥ ...
... ॥ १३४ ॥ ...
... ॥ १३५ ॥ ...
... ॥ १३६ ॥ ...
... ॥ १३७ ॥ ...
... ॥ १३८ ॥ ...
... ॥ १३९ ॥ ...
... ॥ १४० ॥ ...
... ॥ १४१ ॥ ...
... ॥ १४२ ॥ ...
... ॥ १४३ ॥ ...
... ॥ १४४ ॥ ...
... ॥ १४५ ॥ ...
... ॥ १४६ ॥ ...
... ॥ १४७ ॥ ...
... ॥ १४८ ॥ ...
... ॥ १४९ ॥ ...
... ॥ १५० ॥ ...

१५७७ (१६५७)

63

[illegible]

[illegible]

(168)

~~58~~

[illegible]

(159)

[illegible]

श्री (170)

मन्त्रेय एवमयुक्तं पदं रास
मन्त्र एवमिदं मन्त्रं पठ्यमानं
नैव रघु मन्त्रं चरणात् न स
मन्त्रेय एवमयुक्तं पदं रास
मन्त्र एवमिदं मन्त्रं पठ्यमानं
नैव रघु मन्त्रं चरणात् न स
मन्त्रेय एवमयुक्तं पदं रास
मन्त्र एवमिदं मन्त्रं पठ्यमानं
नैव रघु मन्त्रं चरणात् न स
मन्त्रेय एवमयुक्तं पदं रास
मन्त्र एवमिदं मन्त्रं पठ्यमानं
नैव रघु मन्त्रं चरणात् न स

(171)
उलिधल्लोचनस्यत्वात्तद्वर

मन्त्रलोकादिभिर्भयति मतिश्रुति

पादो मन्त्रनोपविष्टिद्वयस्य

तत्परम् उच्यते इति मन्त्रोपाधि

उपोष्यते इति मन्त्रोपाधि

इति मन्त्रोपाधि मन्त्रोपाधि

नीगरोद्यत्वात्तद्वर

पदस्य चत्वारामापीरसा

पदस्य चत्वारामापीरसा

पदस्य चत्वारामापीरसा

पदस्य चत्वारामापीरसा

पदस्य चत्वारामापीरसा



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com